अमृत प्रार्थना
श्री कृष्णजी से

सभी भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना करेंगे।
जब भगवती मां द्रौपदी भरी सभा में लाई जाती है और प्रताड़ित की जाती है तो उस समय उन्होंने पुकार की थी भगवान से। तथा जिस समय गजराज ग्राह के द्वारा सरोवर में खींचे जा रहे थे,उस समय प्रार्थना की थी।
ऐसी प्रार्थना को अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करना चाहिए।
कल जन्माष्टमी है-भगवान का अवतरण दिवस है।
तो भगवान श्रीकृष्ण से आज हम प्राथना करेंगे।
हे द्वारिकाधीश! हे अंतर्यामी!
आप जितना सर्वत्र व्याप्त हैं, निर्गुण निराकार रुप से उतने ही आप विग्रहों के रुप में,मूर्तियों के रुप में मंदिर में भी विराजमान है। लेकिन उससे भी निकट, उससे भी सन्निकट आप सबके हृदय में विराजमान हैं। अंतर्यामी रुप से आप सबके मन बुद्धि चित्र में विराजमान हैं।
आप सबकी सब कुछ जानते हैं,मेरे हृदय की भी आप सब कुछ जानते हैं। पूर्व जन्मों से लेकर अब तक न जाने कौन से कर्म-अकर्म आदि मुझसे हुए ,वह आप सब कुछ जानते हैं,मैं नहीं जानता। मेरी स्मृतियां पूर्व जन्म की विस्मृत हो चुकी है। आज जो भी मेरे पास सुख और दु:ख है
वह अपने पूर्व जन्मों के कर्मों के कारण से है। लेकिन मैं चाहे जैसा भी हूँ, भला हूँ, बुरा हूँ, हे प्रभु! मैं आपका हूँ! आप की ही शरण में आया हूँ!* जब-जब धर्म की हानि होती है, अधर्म की वृद्धि होती है ,भक्तगण,धर्मात्मा,गौ माता
सताई जाती है, पीड़ित की जाती है, हे प्रभु! आप अवतार लेते हैं।
अपने पापों के कारण से,अपने संस्कारों के कारण से मैं स्वयं ही पीड़ित हो रहा हूँ। मेरा मन ,मेरी बुद्धि संसार की ओर खींची जा रही है,विषयों में संलिप्त है। मैं आपके चरणों का उपासक बनूँ।
आपके जीवन में जो अनुकरणीय शिक्षाएं हैं, उन्हें जीवन में धारण कर सकूँ।
मेरी भक्ति, ज्ञान वैराग्य परिपक्व हो उन्नति को प्राप्त हो।भौतिक और आध्यात्मिक जीवन दोनों ही समृद्धि को प्राप्त हो।
ॐ शांति !शांति! शांति!